प्रार्थना पर एक बहस...

विजय विशाल

यह संक्षिप्त आलेख हमारे स्कूलों और शिक्षक प्रशिक्षणों में होने वाली प्रार्थना पर एक बहस शुरू करने के मकसद से दिया जा रहा है। एक परंपरा के तौर पर स्कूलों और प्रशिक्षणों की शुरुआत हर रोज प्रार्थना से होती है। प्रार्थना को लेकर शिक्षा में अनेक सवाल उठते हैं। ये सवाल प्रार्थना की जरूरत, प्रार्थना में निहित मान्यताएं और शिक्षा के लिए इसके निहितार्थ से संबंधित हैं। पाठकों से आग्रह है कि वे अपने विचार हमारे पते या ईमेल पर लिख भेजें (अधिकतम 1000 शब्दों में)। किन्हीं चार चुनिन्दा विचारों को आगामी अंक में प्रकाशित किया जाएगा। यदि आपके आलेख का चयन होता है तो आपको एक वर्ष के लिए शिक्षा विमर्श की सदस्यता उपहार स्वरूप दी जाएगी।

वह एक जिला स्तरीय शिक्षक प्रशिक्षण कार्यशाला थी। इस पांच दिवसीय कार्यशाला का आग़ाज़ हर रोज प्रार्थना से होता था। प्रशिक्षकों के आदेशानुसार सभी शिक्षक आंख मूंदकर खड़े हो जाते और समवेत स्वर में श्रद्धा भाव से प्रार्थना गाने लगते। श्रद्धा और आस्था से नतमस्तक सभी के लिए प्रार्थना का संगीत पक्ष भी कोई मायने नहीं रखता। प्रार्थना के बोल क्या हैं? उन शब्दों से निकलने वाला अर्थ क्या है? अर्थ है भी या नहीं, प्रार्थियों के लिए ये सब बेमतलब बातें हैं। और अगर किसी ने इस विषय पर कोई प्रश्न कर भी दिया कि हम प्रशिक्षण की शुरुआत प्रार्थना से ही क्यों करें; तो सब उसकी ओर कुतुहल और संदेह से देखने लगेंगे। उसके शिक्षक होने पर ही सवालिया निशान लगा देंगे। उनकी नजर में वह व्यक्ति शिक्षक या अध्यापक हो ही नहीं सकता जिसमें भक्तिभाव व भगवान के प्रति आस्था न हो। उनके अनुसार भगवान के प्रति आस्था के प्रकट करने का एक तरीका ही तो है यह प्रार्थना। प्रार्थना के समय विज्ञान, वैज्ञानिक दृष्टिकोण व तर्क इत्यादि सब बेमानी हो जाते हैं।

लेखक परिचय

जन विज्ञान आंदोलन में कई वर्षों तक सक्रिय रहे हैं। साहित्य आलोचना एवं सामयिक मुद्दों पर नियमित लेखन तथा शिक्षा से जुड़े हैं।

मैंने अपने अनेक परिचित शिक्षक साथियों से अन्य कार्यशालाओं की जानकारी ली तो पता चला कि हर कार्यशाला की शुरुआत प्रतिदिन प्रार्थना से ही होती है। प्रशिक्षु अध्यापकों को बताया जाता है कि वे कहीं भी प्रशिक्षण देने जाएं तो हर रोज कार्यशाला की शुरुआत इसी तरह प्रार्थना से करें।

मैंने हर स्तर पर आयोजित होने वाले इन प्रशिक्षणों में प्रशिक्षकों से इस सवाल का जवाब जानना चाहा कि आखिर इन प्रार्थनाओं का इस प्रशिक्षण से क्या संबंध है? लेकिन अभी तक मुझे इसका कोई संतोषजनक या तार्किक जवाब नहीं मिल पाया है। कुछ ने कहा कि दिन की शुरुआत भगवान के नाम से करनी चाहिए, कुछ ने कहा इससे मन को शांति मिलती है और हम हर काम को सफलता से कर पाते हैं। कुछ ने कहा सदाचार को बढ़ावा मिलता है तो कुछ ने कहा इससे हम में नैतिकता बढ़ती है। एक ने बजाय सवाल का जवाब देने के मुझसे ही उल्टे सवाल किया, इसमें बुराई क्या है? दूसरे ने पूछा, आपको इसमें बुरा क्या लगता है?

मेरे सवाल का जवाब इस तरह दिया गया जैसे यही अन्तिम जवाब हैं और इससे आगे सवाल करने की जरूतरत नहीं है। यही आलम हमारे स्कूलों का है। हर रोज स्कूल की शुरुआत प्रार्थना से होती है। क्या रूढ़ हो चुकी इन परंपराओं पर कभी चर्चा होगी, विचार

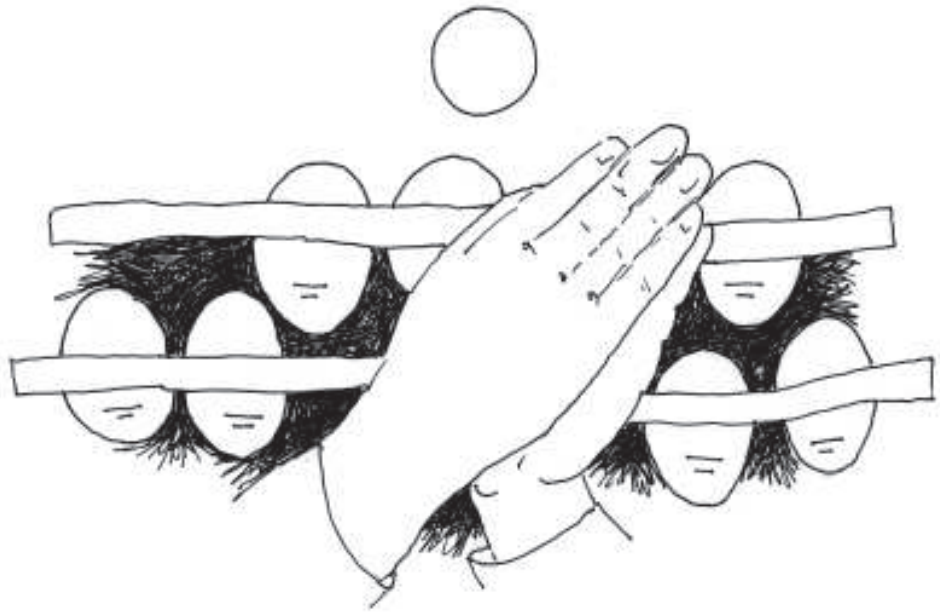

विमर्श होगा? क्या कभी शिक्षकों या विद्यार्थियों के साथ इन मुद्दों पर चर्चा होगी कि इतिहास, भूगोल व विज्ञान की पाठ्यपुस्तकों में प्रकृति के बारे में जो ज्ञान है, उसका इन प्रार्थनाओं में निहित 'ज्ञान' से क्या संबंध है? एक अहम् सवाल यह भी है कि भारत जैसे एक धर्मनिरपेक्ष तथा जनतांत्रिक देश में स्कूलों में इन प्रार्थनाओं का औचित्य क्या है?

मैंने कई कार्यशालाओं में कोशिश की कि स्कूलों में होने वाली इन प्रार्थनाओं व प्रार्थना सभाओं पर चर्चा हो, वाद-विवाद हो, तर्क-वितर्क हों मगर मेरी इस बात को या तो टाल दिया गया या अनसुना कर दिया गया।

मुझे लगता है कि जवाब चाहे जो भी हों लेकिन एक लोकतांत्रिक देश के नागरिकों के लिए यह आवश्यक है कि वे अपने निर्णय सोच-समझकर लें। फिर चाहे वे प्रचलित परंपरा के पक्ष में हों या उसके विरोध में। परंपराओं का बिना सोचे-समझे पालन करते चले जाना और उसके पीछे निहित तर्क की विस्मृति हमें सिर्फ ऐसे अनुयायी ही बनाएगी जिनके पास ऐसे मसलों के अपने जवाब नहीं हैं। शिक्षा से कम से कम यह अपेक्षा तो की ही जा सकती है कि लोग सोच-समझकर निर्णय लें। अपने विवेक का इस्तेमाल करें। एक दीगर सवाल यह भी है कि शिक्षा के जरिए हम किस तरह के इंसानों का निर्माण करना चाहते हैं? परंपराओं के अनुयायी या फिर स्वयं सोच-समझकर निर्णय लेने वाले इंसान?

ये कुछ सवाल हैं जो मेरे मन में चल रहे हैं। मैं चाहता हूं कि आप सभी मेरे इन सवालों को सुलझाने में मदद करें। आप सभी से अनुरोध है कि आप इन सवालों पर अपने विचार स्पष्ट एवं खुले मन से रखें ताकि इस मुद्दे पर लोकतांत्रिक तरीके से बहस को आगे बढ़ाया जा सके। ◆